मेरी रचना कितनी सुन्दर

अंक 6, दिसम्बर 2021

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक :

डॉ. तबीनाह अंजुम कुरैशी (सीनियर जर्नलिस्ट आउटलुक पत्रिका)

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना :

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान

विजय गोयल, रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर.)

संपादक :

मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी

विश्लेषण एवं लेखन :

कौमुदी - दशम एलाइंस

अल्का परमार - स्नेह आंगन

(विभिन्न संस्थाओं के बच्चे)

प्रकाशन :

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से

आर.आई.एच.आर.के माध्यम से प्रसारित

ग्राफिक डिजाईनर :

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इंस्टिट्यूट

9414941489, 8890870215

भूमिका

शिक्षा के महत्व को देखते हुए दशम एलाएंस व उनके कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले किशोर व किशोरियों के साथ लगातार रचनात्मक व क्रियात्मक गतिविधियां करवाई जाती रही हैं। मेरी रचना कितनी सुंदर पुस्तक के इस अंक में उन बच्चों की रचनाएं भी शामिल करने का प्रयास किया है जो लॉकडाउन के दौरान दशम से डिजिटल माध्यम से जुड़ नहीं सके थे। इन विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले किशोर व किशोरियों ने अपने स्वयं के स्तर पर फोटोग्राफी और कहानी लेखन का प्रयास किया है। परन्तु इस पुस्तक का नाम मेरी रचना मेरा संसार रखा गया है क्योंकि ये किशोर किशोरियों के उन कहानी कविताओं का संकलन है जहां बच्चों ने घर से कई समय तक दूर रह कर अपना संसार बनाया है और उसी संसार में रह कर अपने अंदर कई बदलाव किए हैं। उन बदलावों को उनकी कहानी कविताओं में देखा जा सकता है।

जरूरी यह है कि बच्चे दृश्यों को देख शब्दों में अपने रचनात्मक विचारों को व्यक्त कर सकें।

इस अंक में हम विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा उनके द्वारा बनाये गये क्रियात्मक चित्र व विभिन्न अनुपयोगी वस्तुओं से तैयार की गई भिन्न भिन्न वस्तुओं के चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाएं भेजेंगे तो खुशी होगी।

कौमुदी

संपादक की कलम से

कोरोना ने हम सबकी जिंदगी को और जीवन के हर पहलू को बुरी तरह प्रभावित किया है। हताशा और निराशा के इस लम्बे दौर में हमनें बहुत कुछ खोया.... अपनों को और अपने सपनों को भी!

बहरहाल, बच्चों की अपनी अनोखी दुनियां होती है। कोरोना के लम्बे दौर में भी बच्चों ने अपनी इस दुनिया के रंगों को फीका नहीं पड़ने दिया... अपनी उर्जा और क्रियाशीलता से हमेशा जीवंत बनाए रखा।

राजस्थान बाल संरक्षण साझा अभियान ने कोरोनाकाल में बच्चों के लिए फोटो के माध्यम से कहानी कहने की कला पर कुछ कार्यशालाओं का संयोजन किया। बच्चों ने छायाचित्रों के माध्यम से अपने आसपास की दुनिया में झांका और उन्हें जो कुछ भी दिखा उसे उकेर दिया।

प्रस्तुत है बच्चों की नज़र में दुनिया या कह लें बच्चों की दुनियां के अनोखे रंग....

आशा है आपको यह संस्करण पसंद आएगा।

मनीष सिंह

विषय सूची

शीर्षक	लेखक	पेज नं॰
पशु से प्यार करना	हिमांशी शर्मा	01
मैं सबसे छोटी होऊं	मोहित बिजारणियां	02
चार दीवारी से झांकता बचपन	ज्योति पिंगोलिया	03
कोविड-19 के कारण जल्दी विवाह	बलविन्दर	04
लौट आए वो दिन	गौरी सोनी	05
तितली	डिंपल छीपा	06
मोबाइल की कहानी उसकी जुबानी	मनीषा मीणा	07
लड़की और लड़के में भेदभाव	ममता कटारिया	08
संघर्ष	लाली निनामा	09
पोकेट मनी	संजू गुर्जर	10
कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव		11
इस अंक के रचनाकार		12
बच्चों द्वारा बनाए गए रचनात्मक व क्रियात्मक चित्र		13

पशु से प्यार करना

राजस्थान में जयपुर जिले के तुलसीपुर नामक गांव में मीरा नाम की लड़की रहती थी। उसके माता-पिता का नाम अनिता देवी शर्मा और मोहन लाल शर्मा था। उस गांव में कुल 50 घर है। उन पचास घरों में से एक घर मीरा का भी है। मीरा 10वीं कक्षा में पढ़ती थी वैसे मीरा का पूरा नाम मीरा मोहनलाल शर्मा था। वे तीनों अपने परिवार में खुश थे। मीरा की मां घर का काम करती थी और मीरा के पिताजी मजदूर थे। मीरा के पिताजी बहुत अच्छे इंसान हैं वो सबकी बहुत मदद करते हैं। उनके घर में एक गाय थी जो कि बहुत अच्छी थी। वह किसी को भी मारती नहीं थी लेकिन मीरा उसके पास नहीं जा पाती थी क्योंकि उसे उसके विद्यालय के काम से फुर्सत ही नहीं मिलती थी।

फिर अचानक से देश में कोरोना वायरस नामक बीमारी आई जो बड़ी ही घातक बीमारी थी। इस बीमारी के धीरे-धीरे फैलने पर देश में लॉकडाउन लग गया। मीरा का विद्यालय बंद हो गया। उसके पिताजी का काम भी बंद हो गया फिर मीरा आराम से घर पर रहती और उसकी गाय का ध्यान रखती। उसने उसकी गाय का नाम मुनमुन रख दिया। वह मुनमुन को अपने बच्चे जैसे पालती थी। उसको समय पर नहलाती, खाना खिलाती और जहां पर भी मुनमुन रहती वह वहां साफ-सफाई करती और ऐसा करके उसे बहुत खुशी होती। लॉकडाउन में ऐसे उसका समय बीतता गया। वह अपनी गाय मुनमुन के साथ अच्छा समय बिताने लगी और दोनों खुशी-खुशी रहते थे।

शिक्षा - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनके साथ समय बिताना चाहिए।

✍ हिमांशी शर्मा

मैं सबसे छोटा होऊं

मैं सबसे छोटा होऊं तेरी गोद में, मैं सोऊँ,
तेरी साड़ी पकड़-पकड़ कर फिरूँ सदा मां!
मैं तेरा साथ और कभी नहीं छोडूं तेरा हाथ ।

पहले हमको बड़ा बनाकर तू पीछे चलती है मां
फिर सदा हाथ पकड़ हमारे साथ खड़ी रहती है मां।
दिन-रात अपने हाथ से खिला, धुला देती मुंह
धूल पोंछ, सजा शरीर को, थमा देती खिलौने,
और सुनाती हमें परिंदों के फसाने।

ऐसा बड़ा न होऊं मैं,
तेरा प्यार न खोऊं मैं, तेरे आंचल की छाया में
छिपा रहूं बिना डर, इच्छा के।
बस इतना ही चाहूं मां मैं सबसे छोटा होउं
सदा साथ तेरा मैं पाउं ऐसा बड़ा हो जाउं मैं।

✍ मोहित बिजारणियां

चार दीवारी से झांकता बचपन

कोरोनाकाल में घरों में कैद हो चुके बच्चे अपने घर की खिड़की से झांकते हुए सवाल कर रहे हैं कि ये समय कब खत्म होगा? कब हम इस चारदीवारी से बाहर निकलेंगे। कब हम अपने दोस्तों से मिलेंगे? कब हम बाहर की ताजा हवा का आनंद लेंगे? कब हमें इस कैद से मुक्ति मिलेगी? क्या हम पहले की तरह जीवन जी पायेंगे? क्या हम पहले की तरह सभी व्यक्तियों से घुलमिल पायेंगे?

इनकी आंखों में मुझे एक उम्मीद की झलक भी दिख रही है जो यह बयां कर रही है कि इस कोरोनाकाल की वजह से हम सब ने अपना बहुत कीमती समय खो दिया। लेकिन अब सब कुछ ठीक होने वाला है। हम फिर से अपने परिवार-दोस्तों व रिश्तेदारों से मिल सकेंगे।

(यह कहानी इस तस्वीर पर लिखी गयी)

✍ ज्योति पिंगोलिया

कोविड-19 के कारण जल्दी विवाह

इस कहानी में एक लड़की है जो अपने सपने पूरे करने से पहले एक नये रिश्ते में बंध गई।

मेरा नाम बलविन्दर है मेरे गांव में मेरे ही पड़ोस में 17 साल की परमजीत रहती है। परमजीत के घर में उसकी मां और तीन छोटे भाई हैं। परम के पिता का कुछ सालों पहले स्वर्गवास हो गया था। परमजीत अपने सपने पूरा करना चाहती थी लेकिन उसके पापा की मृत्यु के बाद उसे मजदूरी करने जाना पड़ा। वह स्कूल भी जाती थी उसे टीचर बनना था लेकिन कोरोना की वजह से उसकी पढ़ाई रूक गई और उसके लिए लड़का ढूंढने लगे और कुछ महीने बाद उसकी शादी हो गई। परमजीत एक गरीब घर की लड़की थी और वो कुछ करना चाहती थी। अचानक कोरोना का कहर बरसा कि उसके सब सपने गम में बदल गये।

परमजीत को पढ़ने में बहुत रुचि थी। परमजीत कम उम्र की लड़की थी और कोरोना में ज्यादा खर्चा नहीं हो इसलिए उसका विवाह लॉकडाउन में ही हो गया। लॉकडाउन के कारण उसकी शादी जल्दबाजी में कर दी। परमजीत पढ़ाई भी करती और साथ-साथ मजदूरी पर भी जाती थी। परमजीत अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। अपने परिवार का नाम ऊंचा करना चाहती थी।

शादी के बाद जब परमजीत मुझसे मिलने आई तो उसने मुझे पढ़ते देखा और कहने लगी अपनी पढ़ाई पूरी करना बीच में मेरी तरह पढ़ाई मत छोड़ना और बोली कि मेरे भी कुछ सपने थे जो इस कोविड-19 के कारण मेरी पढ़ाई बन्द होने के कारण रह गए। यह परमजीत की कहानी है जो कि उसने मुझे बताई ताकि यह कहानी सबको पढ़ाई पूरी करने की सीख दे। आज भी हमारे समाज में लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है। लड़का जब तक पढ़ना चाहे पढ़े लेकिन लड़की को कुछ पढ़ाकर उसकी शादी कर दी जाती है। जैसे इस कहानी में परमजीत के साथ हुआ उससे हमें यह सीख मिली है कि चाहे कुछ हो जाये हमें स्कूली शिक्षा पूरी करनी चाहिए।

✍ बलविन्दर

लौट आए वो दिन

माना चेहरों पर मास्क है,

पर दोस्तों से गपशप का आनंद फिर से साथ है,

फिर से वह जल्दी उठना दो चोटियां बनाना,

टिफिन बोतल और किताबों से बैग सजाना,

स्कूल में पहली बेंच पर बैठने के लिए झगड़ना,

घंटी की आवाज सुन प्रार्थना सभा में दौड़ना,

कक्षा में दोस्तों संग गप्पे लड़ाना,

एक दूसरे की समस्या सुलझाना।

उदासी को तो फांसी लगाना,

हंसी खुशी से झूलम - झूल मचाना,

मॉनिटर बन सबको चुप कराना,

छुट्टी की घंटी लगते ही चिल्लाते हुए घर जाना,

स्कूल की मजेदार घटनाएं घर पर बताना,

खुद भी हंसना और सबको हंसाना,

फिर लौट आया वह समय मस्ताना

पर डर लगता है कहीं फिर से खो ना जाए यह समय सुहाना।

✍ गौरी सोनी

तितली

मेरी प्यारी नन्ही तितली

हरी डाल पर लगी हुई थी, नन्ही सुंदर एक कली ।

तितली उससे आकर बोली, तुम लगती हो बड़ी भली।

अब जागो तुम आँखे खोलो, और हमारे संग खेलो।

फैले सुंदर महक तुम्हारी, महके सारी गली गली ।

कली छिटक कर खिली रंगीली, तुरंत खेल की सुनकर बात ।

साथ हवा के लगी भागने, तितली रानी उसके साथ।

✍ डिंपल छीपा

मोबाइल की कहानी उसकी जुबानी

टुकटुक नाम का एक मोबाइल था जिसकी मालकिन का नाम बुलबुल था। बुलबुल 15 साल की एक बहुत होशियार लड़की थी। दसवी कक्षा में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण होने पर बुलबुल के पिता ने बुलबुल को एक मोबाइल तोहफे में दिया। बुलबुल मोबाइल पाकर बहुत खुश हुई और अपने मोबाइल का नाम टुकटुक रख दिया। टुकटुक हमेशा बुलबुल के साथ रहता, वह उसकी बातें सुनता, बुलबुल सुन्दर जगह जाकर तस्वीर खींचती और टुकटुक भी बहुत खुश होकर बुलबुल के लिए संगीत बजाता और बुलबुल खुशी से नाचती गाती। ऐसे हर दिन गुज़रता जाता और बुलबुल ज्यादा से ज्यादा टुकटुक के साथ समय बिताती। वह मोबाइल के उपयोग जानने के लिए अपने दोस्तों से भी पूछती रहती। कभी कभी उसके दोस्त और घर वाले उसे डांट कर कहते "क्या तू हर बार इस बारे में बात करती है पूछती रहती है।" तब बुलबुल कुछ और बहाने करने लगती।

यह सब देख बुलबुल के पिता को यह समझ आने लगा था कि उन्होने बुलबुल को मोबाइल देकर गलती कर दी है। एक दिन बुलबुल के पिता ने अपने पास बुला कर उसे मोबाइल को इस्तेमाल करने के बारे में समझाया और उसके फायदे नुकसान के बारे में समझाया। उन्होने बताया कि मोबाइल विद्यार्थियों के लिए जितना उपयोगी है उतना ही नुकसानदायक भी है। मोबाइल हमेशा परिवार व दोस्तों को अपने सम्पर्क में रखने में मदद करता हैं। यदि कभी किसी के साथ दुर्घटना हो जाती है तो इसकी तुरन्त सूचना करने व मदद करने के लिए उपयोग में आता है। मोबाइल्स का शैक्षिक व मनोरंजनात्मक महत्व भी है परन्तु समय की सीमा को ध्यान रख कर इस्तेमाल करने से यह हमारी पढ़ाई में अवरोधक नही बनता।

मोबाइल्स विद्यार्थीयों का ध्यान पढ़ाई से हटाते हैं। राजस्थान सरकार ने कक्षा में इसके प्रयोग को निषिद्ध किया हुआ है। शिक्षण के दौरान मोबाइल्स की घण्टी समस्या पैदा करती है। विद्यार्थी इन यन्त्रों द्वारा मनोरंजन अधिक करते हैं जिससे अधिक से अधिक समय इस पर बिताते हैं। ये माता-पिता पर अनावश्यक आर्थिक बोझ भी बढ़ाता है। इस प्रकार मोबाइल्स विद्यार्थी जीवन के लिए उपयोगी नहीं है।

यह सब बात समझने के बाद बुलबुल को एहसास हुआ कि वह कितना समय व्यर्थ कर रही थी और इस कारण अपने दोस्तों और पढ़ाई के पीछे ध्यान तक नही दे पाई। उसने अपने पिता से मोबाइल का कम इस्तेमाल करने का वादा किया और खूब मेहनत कर अपनी 12वीं की परीक्षा में बहुत अच्छे अंको से पास हो कर दिखाया।

✍ मनीषा मीणा

लड़की और लड़के में भेदभाव

एक गांव में एक परिवार रहता था। उस परिवार में एक भाई बिट्टू और एक बहन रोशनी रहती थी। रोशनी घर में बिट्टू से बड़ी थी। रोशनी के पिता एक साधारण मजदूर थे और मां हमेशा बीमार रहती थी। रोशनी की दादी पुरानी विचारधारा की थीं। जब भी पिताजी घर में खिलौने लाते तो रोशनी के लिए गैस चूल्हा, रसोई के बर्तन, गुड्डे गुड़िया आदि लाकर दे देते और बिट्टू को कार, साइकिल बस गाड़ी आदि खिलौने लाकर देते थे। रोशनी अपने भाई के खिलोने देख उसके साथ खेलने को कहती तो उसकी दादी उसे हमेशा रोक देती और कहती "तू लड़की है ये सब तेरे बस का नहीं है।" रोशनी सहम जाती और अकेले अपने खिलोनों से खेलने लगती। रोशनी कभी बाहर भी जाती तो दादी उसे रोककर वापस घर बुला लेतीं थीं और बिट्टू बाहर जाता तो उसे बिना टोके चले जाने देते थे। दादी हमेशा रोशनी को कहती लड़की नहीं खेलती है खेल तो लड़कों के खेलने का होता है। जब रोशनी पढ़ाई के लिए बैठती तो उसे उठा देते और कहते कि लड़कियां तो घर का काम करती हैं। कुछ समय के बाद दादी ने रोशनी का स्कूल छुड़वा दिया। जिस कारण रोशनी की पढ़ाई छूट गयी।

रोशनी सोचती घर में लड़की जन्म लेती है तो कहते हैं कि पिता के कर्ज हुआ है और लड़के के होने पर खुशियां मनाते हैं ऐसा क्यूँ ?

रोशनी की मां हमेशा यह सब देख बहुत दुखी: हो जाती पर वह अपनी बिमारी के चलते कुछ ना कर पातीं।

रोशनी घर पर ही रहती और चोरी छुपे अपने भाई की किताबें पढ़ा करती। अंत में परीक्षा के दौरान भी वह घर का सारा काम कर स्कूल में चोरी-छिपे परीक्षा देने जाती। जब परीक्षा परिणाम आया तो रोशनी अपनी कक्षा में प्रथम स्थान से पास हुई और बिट्टू फेल हो जाता है। इस बारे में जब घर में दादी और उनके माता पिता को पता चलता है तो तब दादी को एहसास होता है कि उसने बिट्टू पर ज्यादा भरोसा कर और रोशनी को स्कूल छुड़वा कर कितनी बड़ी गलती की।

✍ ममता कटारिया

संघर्ष

सलोनी एक बहुत मेहनती लड़की है। वह कुछ बनना चाहती है और वो अपने सपने पूरे करने को लेकर आत्मविश्वास रखती है। 2016 में सलोनी जब 10वी कक्षा में पढ़ती थी तब उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। उसके पिता ने पढ़ाई के लिए मना किया पर उसने जैसे तैसे अच्छे अंकों से 10वी पास की।

घर के काम की वजह से उसने अपनी पढ़ाई नही छोड़ी और 2018 में 12वी पास कर अपने लिए काम की तलाश करने लगी। उस समय उसके गांव में एक संस्था आई जिसमें बच्चों को पढ़ाने के लिए 12वी पास लड़की की आवश्यकता थी । संस्था वालों ने गांव के लोगों का सर्वे किया तब उन्हें सलोनी के बारे में पता चला। संस्था ने जब सलोनी से पूछा कि वह यह काम करेगी तब उसने हां कहा। तब से सलोनी रोजाना अपने कॉलेज पढ़ाई करने जाती और कई मील दूर जंगलों के रास्ते होते हुए उस गांव के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा कराने जाया करती और वहां से काम खत्म कर सिलाई सीखने जाया करती।

उसने बड़ौदा स्वरोजगार संस्था में सिलाई का काम भी सीखा। जो काम से पैसे मिलते उन पैसों से अपने भाई बहनों को भी पढ़ाती। अभी उसका भाई बी.ए. द्वितीय वर्ष और बहन 11वी कक्षा में पढ़ रही है। उनके रिश्तेदार उनका सहयोग नही करते और पिता से लड़ाई करते हैं।

मां की मृत्यु के कारण पिता को उसकी और उसके बाकी भाई बहनों की भी चिंता थी, वह घर में बड़ी है उसकी शादी की भी चिंता होती। उसके पिता बीमार रहने लगे जिस कारण वह कहीं रोजगार के लिए नही जाते थे। वो संस्था में कुछ सालों से काम कर रही है पर उसमें घर खर्च नही निकल पाता। अभी वह काम के साथ अपनी एम.ए. की शिक्षा भी ले रही है।

सलोनी को अभी भी अच्छे पैसों और काम की तलाश है और अभी सलोनी का संघर्ष बाकी है।

✍ लाली निनामा

पोकेट मनी

मेरा नाम विद्या है और मेरी माँ एक शिक्षिका हैं वह बच्चों को जेब खर्च देने के बारे में बिलकुल भी सहमत नहीं हैं। पर मैं ये सोचती हूं कि ये आवश्यक है क्योंकि हम लोकतंत्र व आर्थिक समृद्धि के युग में रह रहे हैं। बच्चों को आर्थिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। उन्हें अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है। कुछ बच्चे अपने जेब खर्च से धनराशि बचाते हैं। कभी-कभी यह बचत अचानक परिवार पर आर्थिक संकट आने पर माता-पिता द्वारा उपयोग कर ली जाती है। इस प्रकार जेब खर्च बच्चों के लिए उपयोगी होता है।

पर मेरी मां कहती हैं कि बच्चों को जेब खर्च देना अवश्यक नहीं है क्योंकि गरीब माता-पिता इसे वहन नहीं कर सकते। यह मध्यमवर्गीय माता-पिता पर एक वजन है। यह बच्चों की आदतें खराब करता है वे बाल-अपचारी बन सकते हैं। उनकी आवश्यकताएं बढ़ सकती है। उनके पास जेब खर्च होगा तो उनका मस्तिष्क खरीददारी में अधिक व्यस्त रहेगा और पढ़ाई में कम लगेगा। इस प्रकार यह आवश्यक नहीं है।

आप इस बारे में क्या राय रखते हैं ?

आपका अपना सुझाव एक वीडियो के माध्यम से या लिख कर हमें भेज सकते हैं।

✍ संजू गुर्जर

कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव

सकारात्मक	नकारात्मक
सभी लोगों को एक साथ रह कर समय बिताने का मौका मिला। घर के काम काज मिल बांट कर करने लगे।	कोरोना की वजह से बहुत से लोगों को शहर छोड़कर गांव आने में परेशानी हुई।
इस दौरान सभी अपनी अंदर की कमी पर कार्य कर पाए और अच्छी बातों को दूसरों के साथ साझा कर पाए।	कोविड-19 में विद्यालय बंद हो गए जिसके कारण बच्चों का भविष्य भी खतरे में पड़ गया।
कुछ भी खाने के सामान को बाहर से लेकर आने के बाद अपने और सामान को साफ करने के बारे में सचेत रहने लगे।	कोरोना की वजह से किसानों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि उनके खेत का अनाज नहीं बिक रहा है।
जिस किसी की भी कोई छिपी हुई खूबीयॉ थी उस पर कार्य कर सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार करना सीखा।	कोविड-19 के दौरान बहुत लोगों की मृत्यु हुई और कई लोगों की नौकरी भी गई।
बच्चों को शिक्षा के नये तरीके देखने को मिले, और घर के बड़े बुर्जुगों को नई तकनीकि प्रणाली से जुड़ने/सीखने का मौका मिला।	मोबाइल, कम्प्यूटर में 24 घंटों पबजी और अन्य खेलों में बैठे रहने के कारण बच्चों में मैदानी खेलकूद को लेकर उदासी, चिड़चिड़ापन, मोटापा, और आंखों की परेशानीयां होने लगी।
अपने दादा-दादी नाना-नानी से अपनी संस्कृति और इतिहास जानने का मौका मिला। मिल कर सभी ने रामायण, महाभारत टेलीविजन पर देखा।	बच्चे सोशल मीडिया की वीडियो को देखकर हूबहू नकल कर पोस्ट करने लगे और घर वालों से छुपकर मोबाइल चलाने को लेकर कई शिकायतें आई।

इस अंक के रचनाकार

हिमांशी शर्मा

मोहित बिजारणियां

ज्योति पिंगोलिया

बलविन्दर

गौरी सोनी

डिंपल छीपा

लाली निनामा

बच्चों द्वारा बनाए गए रचनात्मक व क्रियात्मक चित्र

SMILE

NITISH

PINTU

PINTU

फि जा · बानो

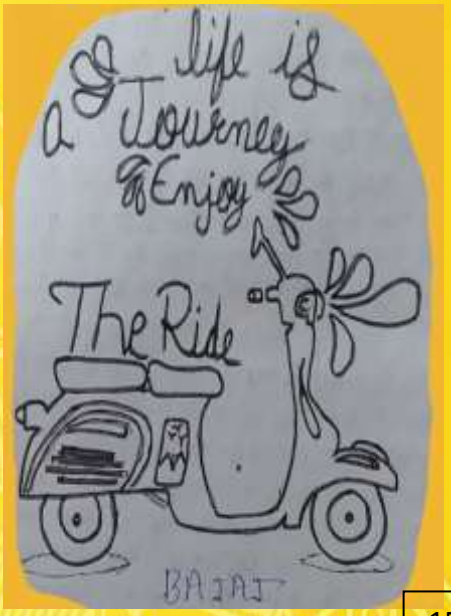
life is
a Journey
Enjoy
The Ride
BAJAJ

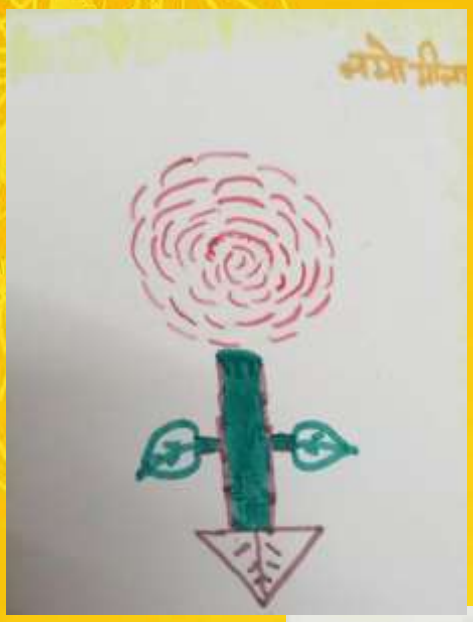

DORAEMON

आंचल

SMILE
SMILE
SMILE

YASHVANT
SAHU

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल

"दशम एलाइंस"

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

सम्पर्क-0141-3532799, 9460387130, 7878055137

Email ID – rihr.rajasthan@gmail.com Web. : http://rihrraj.org